॥ ॐ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यों नमः ॥ 卐 ॥

श्री विकारी नाम संवत्सर

शालीवाहन शक - 1941

दीपावली साधनाएँ 2019

श्री निखिल चेतना केन्द्र, पुलिमामिडी, हैदराबाद (तेलंगाणा)

॥ ॐ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यों नमः ॥ 卐 ॥

दीपावली साधनाएँ 2019

प्रिय साधक बन्धू / भगिनियों.....

श्री निखिल चेतना केन्द्र हैदराबाद की ओर से दीपावली की विशेष साधनाएँ दी जा रही है।

दीपावली की शुभकामनाएँ एवं धन, ऐश्वर्य, समृद्धी की प्राप्ति के लिये साधनात्मक आशिर्वाद ।

परम पूजनीय सद्गुरुदेव स्वामी श्री निखिलेश्वरानन्दजी की असिम कृपा तले साधनाओं की परंपरा को लेकर आगे चल रहे हम सब साधक इस बार दीपावली में लक्ष्मी संबंधित तंत्र साधनाएँ सम्पन्न करेंगे।

होली की रात्री, शिवरात्री, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं दीपावली की रात्रियों को तांत्रोक्त सिद्धी रात्री कहा गया है।

मै इस बार हर बार की तरह धनत्रयोदशी से लेकर यम द्वितीया की रात्री तक पांच दिनों की साधनाऐं दे रहा हूँ ।

आप सब साधक साधना सम्पन्न करें एवं अनुभव करें की आप सफलता की ओर अग्रसर है, तो मुझे मेरे इस प्रयास का सफल अनुभव होगा, प्रसन्नता होगी।

आपका अपना गुरु भाई

डॉ. अनिल कुमार जोशी

॥ ॐ ॥ श्री गुरु चरण कमलेभ्यों नमः ॥ 卐 ॥

दीपावली साधनाएँ

दीपावली पूजन एवं साधना विधान 2019

दीपावली की विशेष साधनाएँ

श्री निखिल चेतना केन्द्र हैदराबाद (तेलंगाणा) की ओर से

प्रिय साधक बन्धु / भगिनियों.....

अपने शास्त्रों के अनुसार जहाँ महिलाएँ पुजी जाती है, या उनका सम्मान किया जाता है, वहाँ देवताओं का वास होता है। और दीपावली यह एक ऐसा पर्व है जहाँ धनत्रयोदशी से लेकर यम द्वितीया तक देवी महालक्ष्मी का पूजन पाँच रुपों मे होता है। माता, बहन,पत्नी, बेटी एवं शक्ति देवी के रुपों मे होता है। समुद्रोद्भवा होने के कारण,शंख (दक्षिणावर्त) को महालक्ष्मी का भ्राता कहा गया है। एकाक्षी नारियल पिता, कामधेनु बहन, ऐरावत (हाथी) छोटा भाई, चंद्र भाई, कल्पवृक्ष देवता, कुर्म रुप विष्णु पति कुर्मपृष्ठीय श्री यंत्र। इन दीपावली के पाँच दिनों मे समुद्र से उत्पन्न वस्तुओं को महालक्ष्मी जी की पुजा मे रखकर उनके सारे बन्धु गणों के साथ पूजा जाता है।

धनत्रयोदशी, शुक्रवार, दि.25-10-2019 के दिन सर्व प्रथम गणेश जी के पुजन के बाद दक्षिणावर्त शंख की एवं एकाक्षी नारियल की स्थापना पूजा से आरंभ होता है।

व्यापारी वर्ग के लिए बही-खाता खरिदने का समय :-

09:00 am - 10.20 am;
01.00 pm - 02.00 pm
08.00 pm - 10.00 pm

दक्षिणावर्ति शंख कल्प प्रयोग

प्रथम पूजा स्थान मे लक्ष्मी-गणपति यंत्र की स्थापना कर संक्षिप्त पूजन कर प्रार्थना करे कि, मै यह पाँच दिन जो भी साधनायें करूँगा, हे देवाधिदेव गणपति भगवान् वे निर्विघ्नता से पूर्ण हो ऐसी प्रार्थना करे। फिर गुरु यंत्र, पादुका स्थापित कर संक्षिप्त पूजन करे। गुरुजी से साधना आशिर्वाद प्राप्त करने के लिये ग्यारह (11) माला गुरु मंत्र जप करें।

इसके बाद चौकी पर दक्षिणावर्त शंख को स्थापना निम्न प्रकार से करे।

धनत्रयोदशी की प्रातः काल स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण करें और पहले से ही अगरबत्ती, शुद्ध घी का दीपक, कुंकुम, अक्षत, चाँदी का वर्क आदि की व्यवस्था कर ले। फिर पहले शंख को गाय के कच्चे दूध से धोवे। फिर जल से अच्छी तरह धोकर पोंछ दें। फिर शंख के ऊपर चाँदी का वर्क (जैसे मिठाई) पर वर्क लगाते हैं लगावें और शंख पर केसर से ''**श्रीं**'' अक्षर लिखे, फिर शंख का निम्न मंत्र से पूजन करे।

मंत्र :-

।। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्यायपयोनिधि जाताय
श्री दक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्री कराय पूज्याय नमः ।।

शंख पर कुंकुम, चावल, इत्र आदि इस मन्त्र से चढावें और फिर शंख को चांदी के या तांबे थाली में स्थापित करे। सामने दूध का बना हुआ प्रसाद भोग के रूप में लगावें और फिर कर्पूर से आरती करे। इसके बाद दानों हाथ जोड कर दक्षिणावर्त शंख का ध्यान करें।

ध्यान :- **।। ॐ ह्रीं क्लीं श्रीधर करस्याय पयोनिधि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तितार्थ संपादकाय श्री दक्षिणावर्त शंखाय श्री कराय, पूज्याय क्लीं श्रीं ॐ नमः सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्तायंगोपाड्यसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणी नवनिधिरुपाय चतुर्दश रत्न परिवृत्ताय अष्टदश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता श्री कृष्णदेव करतल लालिताय श्री शंख महानिधये नमः।।**

इसके बाद हकीक या स्फटिक माला से पांच (5) माला मन्त्र जप करें।

मूल मन्त्रः-

।। ॐ श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणमुखाय शंख निधये समुद्रप्रभवाय नमः।।

फिर इस शंख को चौबीस घण्टे तक या दीपावली तक पूजा स्थान में ही रहने दें और बाद में लाल वस्त्र में लपेट कर घर में जहां रुपये, पैसे या आभूषण आदि रखते है, वहां पर रख दे, तो उसके जीवन में निरन्तर व्यापारिक उन्नति होती रहती है और किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। वास्तव में ही यह गोपनीय प्रयोग अपने आप में अद्वितीय, आश्चर्यजनक सिद्धिदायक है।

यमदीप दान धनत्रयोदशी 25-10-2019 के दिन रात्री मे दीप पूजन एवं यमदीप दान का कार्यक्रम करना ठीक रहेगा।

आटे का दीपक बनाकर उसकी ज्योत दक्षिण दिशा की ओर रखे एवं निम्न मंत्र से दीपक को नमस्कार करे। इससे अकाल मृत्यु दोष, दीर्घ रोग दोष निवारण होता है। घर का हर सदस्य यह दीप दान करे।

मंत्र :- **।। मृत्युनां पाशदंडाभ्यां कालेन श्यामयासह**
त्रयोदश्यां दीपदानांत् सुर्यजः प्रियतां मम ।।

नरक चतुर्दशी एवं अमावस्या - रविवार, दि.27-10-2019, लक्ष्मी पूजन :- के दिन अभ्यंग स्नान के बाद, कल्पवृक्ष एवं ऐरावत हाथी का पूजन (श्री कृष्ण सांप्रदाय के अनुसार) नरकलोक की प्राप्ती न होने के लिये यमदीप दान समुद्र की कौडी एवं सिप का पूजन करे।

प्रातः सुर्योदय से पूर्व अभ्यंग स्नान के पश्चात् पूजा जप आदि के बाद नरक प्राप्ती न होने के लिए दक्षिण दिशा की ओर मुख कर यमधर्मराज जी को जल से तर्पण (जिनको पिता नही है वे तेल मिश्रित जल से) निम्न मंत्र से करे एवं दस बार निम्न मंत्र बोलते हुए नमस्कार करे।

1. यमाय नमः
2. धर्मराजाय नमः
3. मृत्यवे नमः
4. अंतकाय नमः
5. वैवस्वताय नमः
6. कालाय नमः
7. सर्वभूत क्षयाय नमः
8. औदुम्बराय नमः
9. दध्नाय नमः
10. नीलाय नमः
11. परमेष्ठिने नमः
12. वृकोदराय नमः
13. चित्राय नमः
14. चित्रगुप्ताय नमः

तर्पण के बाद दक्षिण दिशा की ओर मुख कर दस (10) बार बोलने का मंत्र :- **यमोनिहंता पितृधर्मराजो वैवस्वतो दंडधरश्च कालः ।**
भूताधिपो दत्त कृतानुसारी कृतांत एतद्दशभिर्जपंति ।।

लक्ष्मी पूजन मुहूर्त :- दि.27-10- 2019, रविवार
दोपहर 01:40 PM से 03:00 PM, रात्रि 06:00 PM से 11:30 PM

दि. 27-10-2019, रविवारः-अमावस्या के दिन महालक्ष्मी देवी का उनके सभी रुपो एवं परिवार जनों सहित विशेष पूजन, कुबेर पूजन करना है।

शास्त्रोक्त महालक्ष्मी पूजन

धन को आराध्य देवी, लक्ष्मी मानी गई है। जो कि समुद्र से उत्पन्न भगवान विष्णु की प्रियतमा है। इनकी आराधना और पुजन जीवन का शुभ प्रतीक है। दीपावली के अवसर पर तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी श्रद्धा से महालक्ष्मी का पूजन करता है। परन्तु इसके लिए विधान यह है। कि जब कभी मन मे इच्छा उत्पन्न हो तभी महालक्ष्मी पुजन किया जा सकता है। इस कै लिऐ कोई मुहुर्त आदि देखने की आवश्यकता नही होती, यदि नित्य महालक्ष्मी पुजन सायंकाल किया जाय तो एक श्रेष्ठ उपलब्धि है।

विधानः- दीपावली के दिन प्रातः काल उठकर स्नान सन्ध्यादि से निवृत्त होकर एक मिट्टी के पात्र मे सिन्दुर और घी मिलाकर लेप सा बनावे और उससे अपने पूजा स्थान घर या दुकान की दीवारों पर पन्द्रहिया यंत्र 'स्वस्तिक' अथवा बीसा यंत्र अंकित करे। साथ ही ''शुभ लाभ'', ''श्री महालक्ष्म्यै नमः'', ''श्री कुबेराय नमः'' आदि मंगल वाक्य भी अंकित करना चाहिए।

इसके बाद घर के मुख्यद्वार पर आम या पीपल के पत्तों से तोरण बनाकर बांधना चाहिए। जल भरने के स्थान पर एक कलश मांजकर उसे जल से भरकर उस पर कुंकुम से स्वस्तिक अंकित कर स्थापित कर देना चाहिए। तथा उस पर एक कटोरी मे थोडे से चावल, हल्दी की गांठ, आम के पत्ते , कमल गट्टे के पुष्प तथा दुर्वा रखनी चाहिए। गले मे मौली या कलावा बांधना चाहिए। रात्रि को महालक्ष्मी को पूजन से पहले निम्न वस्तुओं मे से जो जो सम्भव हो वे पहले से ही मंगाकर रख लेना चाहिए।

सामग्री :- रोली, चावल, नारियल, चंदन, हल्दी, धुप, दीप, कपुर, नैवेद्य, फल, पुष्प, पान, सुपारियां, मौली(कलावा), दुर्वा, पंच पल्लव, दुध, दही, घृत, शहद, शक्कर, गुड, सरसो, कमल गट्टा, श्वेत वस्त्र, लाल वस्त्र, यज्ञोपवीत, गंगाजल, शुद्ध जल, कलश, खील बताशे, मेवा, चांदी का सिक्का, आभूषण, सिन्दुर, रुई, आसन, कलम, दवात, बही खाते, गणेश, लक्ष्मी की प्रतिमा या चित्र आदि।

साधना सामग्री :- श्री लक्ष्मी यंत्र, लक्ष्मी माला।

इसके बाद जिस स्थान पर लक्ष्मी पूजन करना हो, उस स्थान को गोबर से लीप लेना चाहिए। यदि पक्का फर्स हो तो शुद्ध जल से उसे धो लेना चाहिए। फिर सामने लकडी का बाजोट रखकर, उस पर लाल कपडा बिछाकर, गणेश, लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित कर देना चाहिए। किसी थाली मे कुंकुम से स्वास्तिक बनाकर, महालक्ष्मी यंत्र को स्थापित कर दे। तथा कुंकुम से ''ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यों नमः'' उच्चारण करते हुए स्वयं अपने ललाट पर तिलक धारण करे। लक्ष्मी पूजन के साथ सिक्कों की पुजा करे। सिक्कों की पुजा करने का भी विधान है। अतः किसी थाली मे स्वस्तिक बनाकर, उसमे वे सिक्कें या रोकडे रुपये, अथवा गहने रखे देना चाहिए। चौकी के समीप ही (व्यापारी हो तो) वही-खाता, कलम, दवात आदि भी रख देने चाहिए।

सबसे पहले खातों को खोल कर उसके पहले तिसरे या पांचवें पन्ने पर कुंकुम या स्वस्तिक बनाकर, उस पर रोली लगानी चाहिए। तथा उसके निचे क्रमशः इन वाक्यों को लिखना चाहिए।

ॐ श्री गणेशाय नमः।, ॐ श्री महालक्ष्म्ये नमः।, ॐ श्री कुबेराय नमः। फिर निचे तिथि, वार, आदि लिखकर, स्वस्तिक की पुजा करनी चाहिए। एक अलग बाजोट पर सफेद कपडा बिछाकर, उस पर तांबे का कलश स्थापित करना चाहिए। कलश पर नारियल रखना चाहिए। फिर गणेश जी के सामने दीपक जला देना चाहिए। अगरबत्ती को भी जलाकर रखे देनी चाहिए।

इसके बाद पूजन सामग्री एक थाली मे सजाकर रखदेनी चाहिए। फिर पूजनकर्ता धोती कुरता पहन कर पुर्व दिशा या उत्तर दिशा की तरफ मुंह कर अपनी पत्नी के साथ बैठे। पत्नी सुंदर, सुसज्जित वस्त्र, गहने आदि पहन कर,

साथ ही पुरे परिवार को पुजन मे भाग लेने के लिए बुलावे। पत्नी को अपने दाहिने हाथ की तरफ बिठावे। आसन कैसा भी हो सकता है। पूजन से पुर्व धोती मे गांठ लगा लेनी चाहिए।

गणपति आह्वान् :- सर्व प्रथम दोनो हाथ जोडकर गणपति का आह्वान् करे। ॐ श्रीं गणेशाय नमः ऋद्धि सिद्धि सहितं मम गृहे महागणपतिं आवाहनं समर्पयामि।

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।

महालक्ष्मी आह्वान् :- भगवति लक्ष्मी का आह्वान् करे।

कान्त्या कांचन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजे-
र्हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानांश्रियम्।
विप्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैःकिरीटोज्जवलाम्
क्षेमौबद्धनितम्ब बिम्ब लसितां वन्दे रविन्द-स्थित ।।

दाहिने हाथ मे जल लेकर विनियोग करे।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री सिद्ध लक्ष्मी मंत्रस्य, हिरण्यगर्भ ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता, श्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, सर्व क्लेश पीडा परिहारार्थं च सर्व दुःख दारिद्रय निवारणार्थं सर्व कार्य सिद्धयर्थं च सिद्ध लक्ष्म्यै पूजनं विनियोगः।

न्यास :- ॐ हिरण्यगर्भ ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे। श्री महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः लिंगे। ह्रीं शक्तये नमः पादयो। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। सर्व क्लेश पीडा परिहारार्थं च श्रीं सिद्धलक्ष्मी मंत्र जपे विनियोगाय नमः सर्वांङ्गे।

करन्यास :- ॐ देव्ये नमःअंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ पद्मिन्ये नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ विष्णुपत्न्ये नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वरदाय नमः ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कमलाये नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सिद्ध लक्ष्म्ये नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

संकल्प :- दाहिने हाथ मे जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी लेकर संकल्प करे। ॐ र्विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथमचरणे, जम्बूद्वीपे भारतवर्षे (अमुक) क्षेत्रे, अमुक नगरे, श्री दुर्मुख नाम संवत्सरे दक्षिणायने कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अमावस्या पुण्य तिथौ रवि वासरे सर्वेषु गृहेषु यथा राशिस्थानस्थितेषु (अमुक) गोत्रोत्पन्नोऽहं देवता पित्यर्थे यथाज्ञानं, यथामिलितोपचारैः श्री महालक्ष्मी पूजनं च करिष्ये। तदङ्गत्वेन गणेश, कलश पूजनं करिष्ये।

इसके पश्चात् अपने सामने जल का पात्र भरकर रखे। यह पात्र ताम्बे का या चांदी का हो, फिर वरुण ध्यान करके कलश का पूजन करे।

वरुण ध्यानः- नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाशहस्ता झषासनाय जलाधिनाथाय।।
नमो नमस्ते मकरस्थं पाशहस्तभसां पतिमीश्वरम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ।।
वरुणं ध्यायामि, आवाहयामि पूजयामि।

कलश पूजनः- कलश को जल से भरकर देव के दाहिनी ओर (अपनी बायी ओर) रखे और उसमें वरुण का आह्वान् करे।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थ दुरितक्षयकारकाः।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणांस्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धराः।
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिता।।
प्रसन्नो भव। वरदो भव। अनया पूजया।
वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम।।

प्रोक्षण :- कलश के जल को पूजा पात्र मे लेकर इस जल से समस्त पूजन सामग्री एवं देवताओं का प्रोक्षण करे। बाये हाथ मे कलश लेकर दाहिने हाथ मे पुष्प से उस जल को समस्त पूजन सामग्री, चित्र, मूर्ति, दीपक एवं स्थान आदि पर छिडके। छिडकते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करे।

''ॐ अपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरंगमाम वो यस्यः क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।''

आत्म प्रोक्षण :- ।। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरःशुचि : ।।

आसन शुद्धि :- पूजन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व अपने आसन को शुद्ध करना आवश्यक माना गया है। इसके लिए अपने आसन के नीचे चन्दन या जल से त्रिकोण बनाकर उस पर गंध, अक्षत, पुष्प निम्न मंत्र के द्वारा समर्पित करे।

।। ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि, त्वं विष्णुना घृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

फिर इस त्रिकोण पर आसन बिछाकर हाथ जोडकर प्रार्थना करे।

ॐ आधारशक्तये नमः।, ॐ कूर्मासनाय नमः ।, ॐ अनंतासनाय नमः।, ॐ विमलासनाय नमः।, ॐ आत्मासनाय नमः।

दिग्बन्धन :- किसी भी देवताओं के पूजन से पूर्व दिग्बन्धन आवश्यक माना गया है। दिग्बन्धन का तात्पर्य है, कि पूजन के समय राक्षस एवं अन्य भूत-प्रेत, पिशाच आदि का प्रभाव न पडे और न किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित हो। इसके लिए सभी दिशाओं को बांधने की क्रिया को दिग्बन्धन कहते है।

साधक अपने बाये हाथ में सरसों लेकर निम्न मंत्र पढता हुआ दाहिने हाथ से वे सरसों दसो दिशाओं की तरफ फेंके।

।। ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमि संस्थितः।
ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नशयन्तु शिवाज्ञया ।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारंभे।।

नव-ग्रह पूजन :- नौ ग्रहों के संक्षिप्त पूजन के लिए कलश के बाजू मे चठावल के ढेरी पर नौ सुपारी स्थापन करे। फिर बाँएँ हाथ मे गन्धाक्षत लेकर भावना से सामूहिक रुप मे उन सबका निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आवाहन करे।

ॐ सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनिश्चर-राहु-केतु नव ग्रहेभ्यो नमः। ॐ नव ग्रहाः! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।

यह मंत्र पढकर उक्त पात्र मे गन्धाक्षत छोडे। फिर निम्न मंत्रों से प्रत्येक मंत्र के आदि मे ॐ लगाकर क्रमशः सूर्यादि नौ ग्रहों का पाद्यादि उपचारों से पूजन करे।

ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पादयो पाद्यं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः हस्तयो अर्घं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः पुष्पं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः धूपं आघ्रापयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि।
ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि।

फिर हाथ जोडकर सभी ग्रहों की प्रार्थना करेः-

ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी, भानु-शशी-भूमि-सुतोबुधश्च।
गुरुश्च-शुक्रः-शनि-राहु-केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति-करा भवन्तु।।

भैरव पूजन :- सभी प्रकार के विघ्नों को दूर करने के लिए तथा पूजन कार्य में रक्षा के लिए भैरव की स्थापना आवश्यक मानी गई है। अतः साधक को चाहिए, कि वह बांयी ओर छोटी सी चावल की ढेरी बनाकर उस पर सुपारी रखे और उस सुपारी में भैरव की भावना दे, उसके सामने गुड का भोग लगावे और हाथ जोडकर प्रार्थना करे।

मंत्र :-

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपमा ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि ।।
ॐ भं भैरवाय नमः।।

दीपक पूजन :- इसके बाद साधक को दीपक पूजन करना चाहिए। दीपक को प्रज्वलित करे और गंध, अक्षत, पुष्प से उसकी पूजा निम्न मंत्रों द्वारा करे।

अस्मिन्क्षेत्रे दीपनाथ निर्विघ्न सिद्धिहेतवे ।
महालक्ष्मी पूजार्थ मनुज्ञाँ दीयतां मम ।।
दीपो ज्योतिः परब्रह्मः दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे ध्वान्तं संविद्दीप नमोस्तुते ।।
भो दीप देवी रुपस्त्वं कर्मसाक्षिह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्म समाप्तिस्यात तावत्वं सुस्थिरो भव ।।

गणपति पूजन :- इसके बाद साधक गणपति पूजन करे। अपने सामने गणपति मूर्ति या चित्र को जल से स्नान कराकर पोछकर चन्दन या केसर से तिलक करे। अक्षत, पुष्प चढावे, नैवेद्य का भोग लगावे, तथा अन्त में हाथ जोडकर प्रार्थना करे।

विनायकं वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ।।

श्री गुरु ध्यान :- द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्सुमुद्रं ।
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम् ।।
श्रुतिशिरसिविभांतं बोधमार्तण्डमूर्ति ।
शमिततिमिरशोक श्रीगुरुं भावयामि ।।
हृदंबुजे-कर्णिकमध्यसंस्थं।
सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम् ।।
ध्यायेद्गुरु चन्द्रशिलाप्रकाशं ।
चित्पुस्तकाभिष्टवरं दधानम् ।।

श्री गुरुपादुकाभ्यो नमः। ध्यानं समर्पयामि। ॐ स्वरुपनिरुपण हेतवे श्री गुरुवे नमः।ॐ स्वच्छप्रकाशविमर्श हेतवे श्री परम गुरुवे नमः।ॐ स्वात्माराम पन्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठि गुरुवे नमः। आवाहयामि, पूजयामि।

फिर गुरु को पुष्प, चन्दन, अक्षत आदि समर्पित कर दोनो हाथ जोडकर प्रार्थना करे।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन सस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानान्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णो गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

गुरु पूजन के बाद साधक महालक्ष्मी पूजन प्रारम्भ करे। सर्व प्रथम महालक्ष्मी का हाथ जोडकर ध्यान करे। ध्यान से पूर्व अगरबत्ती, तेल और घी का दीपक प्रज्वलित कर दे और शुद्ध मन से पूर्ण निष्ठा के साथ भगवती महालक्ष्मी का आह्वान करे।

मंत्रः- ।।ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः ध्यानं समर्पयामि।

आह्वान :- ॐ सर्वलोकस्य जननी पद्महस्तां सुलोचनाम् ।
ॐ सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ।।
ॐ हिरण्यवर्णा हरिणो सुवर्ण रजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदोऽम आ वह ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः आवाहनं समर्पयामि।

पाद्य :- अर्घ्यं मे जल लेकर निम्न मंत्र से भगवती महालक्ष्मी को अर्घ्य प्रदान करे।

अष्टगंधसमायुक्तं स्वर्णपात्रपूरितम ।
अर्घ्य गृहाण महतं महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः हस्तयोर्घ्यं समर्पयामि।

आचमन :- सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णु शिवादिभिः।
स्तुता ददाम्याच मन महालक्ष्म्यै मनोहरम् ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नान :- पंचामृतसमायुक्तं जाह्नवीसलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्नजनिन स्नानार्थ भक्तवत्सले।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

पंचामृत स्नान :- मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वित्
पंचामृत गृहाणेदं पंचास्यप्राणवल्लभे।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान :-ॐ गोरौ मिनाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टपदी बभूवुषी सहस्त्रजरा परमे व्योमन् ।।
परमानन्दबोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये।
शुद्धोदकैस्तव स्नानं कल्पयाभ्यम्ब शंकरि ।।
श्रीमातृ नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।
श्री महालक्ष्म्यै नमः शुद्धोतक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रं :- दिव्यांबरं नूतनं हि क्षीभंत्यरिति मनोहरम ।
दीयमानं महादेवी गृहाण जगदम्बिके ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुपर्क :- महालक्ष्मी को एक कटोरी मे घी और गुड मिलाकर मधुपर्क प्रदान करे।
कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम् ।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि मधुपर्क गृहण मे ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

आभूषण :- रत्नं कङ्गणवेदूर्यमुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नगमना सा दत्तानि स्वीकुरुष्य मे।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः आभूषणं समर्पयामि।

गन्ध :- ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षत :- अक्षतान धवलान देवि! शालीकां-स्तण्डुलान् शुभान ।
हरिद्राकुंकुमोपेतान् गृहाणाम्ब कृपानिधे ।
श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प :- मन्दारपारिजाता दीन्पाटलं केतकी तथा।
मेरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोस्तुते।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पं समर्पयामि।

अंग पूजा :- साधक अपने हाथ में अक्षत एवं पुष्प लेकर उसे निम्न मंत्र से समर्पित करता हुआ उनकी अंग पूजा संपन्न करे।

ॐ लक्ष्म्यै नमः पादौ पूजयामि ।, ॐ गौर्यै नमः जंघे पूजयामि ।, ॐ पद्मायै नमः जानुनिं पूजयामि ।, ॐ जगद्धात्र्यै नमः ऊरुं पूजयामि ।, ॐ जगत्

प्रतिष्ठायै नमः कटिं पूजयामि । ॐ देव्यै नमः उदरं पूजयामि ।, ॐ लोक वन्दितायै नमः नाभों पूजयामि ।, ॐ कल्याण्यै नमः कण्ठं पूजयामि ।, ॐ शान्तिरुपिण्यै नमः मुखं पूजयामि।, ॐ भवान्यै नमः स्तनौ पूजयामि ।, ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः कर्णो पूजयामि।, ॐ शर्वाण्यै नमः ललाटं पूजयामि ।, ॐ मंगलदात्र्यै नमः शिरं पूजयामि ।

सौभाग्य द्रव्य :- कज्जलं चैव सिन्दूरं हरिद्राकुंकुमानि च ।
भक्त्यार्पितानि श्रीमातः सौभाग्यानि च स्वीकुरु ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः सौभाग्य द्रव्यं समर्पयामि।

धूप :- वनस्पति रसोद्भूतो गंधाढ्य सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपम् आघ्रापयामि ।

दीप :- कर्पूरवर्ति संयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाश करं दीपं गृहाण परमेश्वरी ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपम् दर्शयामि ।

नैवेद्य :- नैवेद्य गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् ।
षड्रसैरसमन्वितं लक्ष्मी देवि नमोस्तु ते।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि ।

नैवेद्य प्रोक्षण :- ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्व शक्त्यै च धीमहि तन्नो देवि प्रचोदयात् ।
श्री महालक्ष्म्यै नमः करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ताम्बूल :- एलालवंगकर्पूर नागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूंगी फलेन् संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः मुखशुद्धयर्थ ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा :- पूजापूर्णत्व सिद्धयर्थ पूर्णे पूर्णफलप्रदे।
हेमरत्नमयीं द्रव्य दक्षिणां स्वीकुरुष्व मे ।।
श्री महालक्ष्म्यै नमः सांगता सिद्धयर्थ हिरण्यगर्भ दक्षिणां समर्पयामि।

इसके बाद लक्ष्मी माला से निम्नलिखित मंत्र का इक्कीस (21) माला मंत्र जप संपन्न करे।

मंत्र :-

।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै गरुड वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।।

महालक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मइया जय लक्ष्मी माता,
तुमको निसिदिन सेवत, हर विष्णु धाता ।।ॐ जय लक्ष्मी ...

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता,
सुर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

दुर्गा रुप निरंजनि, सुख सम्पति दाता,
जो कोई तुमको ध्याता, रिधी सिधि धन पाता ।।ॐ जय लक्ष्मी ...

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता,
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

जिस घर में तुम रहती, तहं सब सद्गुण आता,
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता,
खान पान का वैभव, सब तुम से आता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर क्षीरोदधि जाता,
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता ।। ॐ जय लक्ष्मी ...

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता,
हर आनन्द समाता, पाप उतर जाता । ॐ जय लक्ष्मी ...

जल आरती :-ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिःर्ब्रह्माशान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि ।

प्रदक्षिणा :- यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर-कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति, प्रदक्षिणं पदे पदे ।।
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं देवि ।
तस्मात् कारुण्य-भावेन, क्षमस्व परमेश्वरि ।।
।। श्री लक्ष्मी-देव्यै प्रदक्षिणां समर्पयामि ।।

पुष्पांजली :- राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणाय ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय, महाराजाय नमः।

नमस्कार :- केतकी जाति कुसुमैर्मल्लिका मालती र्भवः।
पुष्पांजलिर्मया दत्ता तावप्राप्त्यै नमोस्तुते।।
।। श्री लक्ष्मी-देव्यै प्रदक्षिणां समर्पयामि ।।

क्षमापन :- अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेहर्णिशं मया।
दासोयमिति मां महा क्षमस्व परमेश्वरी।।
सापराधोस्मि शरणं प्राप्तस्वां जगदम्बिके।
इदानी मनुकम्योहं यथेच्छसि तथा कुरु।।
अजानाद विस्मृतेह भ्रात्यां यन्न्पुनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्व क्षम्यतां देवी प्रसीद परमेश्वरि।।

विशेषार्घ्य :- कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानंद विग्रहे।
गृहाणार्यामिमां प्रीत्यां प्रसीद परमेश्वरि।।
अनेन कृतेन पुजा साधना कर्मणा श्री महालक्ष्म्ये प्रीयन्ताम्।

इस प्रकार पुर्ण, विधि विधान के साथ महालक्ष्मी का पुजन करे। तत्पश्चात् महालक्ष्मी को जो भोग लगाया हुआ है, वह प्रसाद परिवार जनों को वितरित करे।

दीपावली की रात्री को कई स्थानों पर महालक्ष्मी पुजन के उपरान्त तराजु पुजन, बही पुजन, मसी पात्र पुजन, लेखनी पुजन आदि का भी विधान है। अतः यदि साधक चाहे तो उसके बाद इस सबकी भी पुजा करे। पुजन के बाद साधक परिवार वालों के साथ भोजन करे, पर लक्ष्मी देवी के सामने दोनों दीपक बराबर जलते रहे, तथा पुजन सामग्री एवं पुजन उपयोगी द्रव्य वहां से नही हटावे।

दुसरे दिन प्रातः काल सुर्योदयके समय पुनः संक्षिप्त महालक्ष्मी का पुजन करे, और उसके बाद ही महालक्ष्मी की मुर्ति या चित्र, यंत्र को यथा स्थान

स्थापित किया जा सकता है। मसीपात्र, वही-खाता आदि को भी अपने स्थान पर रखा जा सकता है। इस प्रकार विधि विधान पुर्वक महालक्ष्मी पुजन करने से निश्चितरुप से धनधान्य वृद्धि एवं मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

लेखनी पूजन :- लेखनी (कलम) पर मौली बाँधकर सामने रख ले और निम्न मंत्र से गंध, पुष्पाक्षत अर्पण करे।

लेखनी निर्मितां पुर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना।
लोकनां च हितार्थाय तस्मातां पुजयाम्यहम् ।।
ॐ लेखनीस्वधायै देव्यै नमः।

वही खाता पूजन :- वही खाते के पहले पन्ने पर केसरयुक्त चंदन से स्वस्तिक चिह्न बनाये, तथा उस पर गंधाक्षत, पुष्प रखकर, उसमे सरस्वती जी का ध्यान इस प्रकार से करे।

ध्यान :- या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला, या शुभ्र - वस्त्रावृता,
या वीणा-वर-मण्डित-करा, या श्वेत - पद्मासना ।
या ब्रह्माऽच्युत - शङ्कर - प्रभृतिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ।।

ॐ वीणापुस्तक धारिण्यै श्री सरस्वत्यै नमः।। इस मंत्र से गन्धादि उपचारों द्वारा पुजन करे।

तुला मसी पूजन :- सिन्दूर से तराजू आदि पर स्वस्तिक बना ले। उस पर मौली लपेटकर तुलाधिष्ठातृ देवता का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए।

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ।।

ध्यान के बाद **ॐ तुलाधिष्ठातृ देवतायै नमः** इस नाम मंत्र से गन्धाक्षतादि उपचारों द्वारा पूजन कर नमस्कार करे ।

दि.28-10- 2019, सोमवार, बलि प्रतिपदा :- के दिन कुर्मपुष्ठ श्रीयंत्र का वास्तु देवता के रुप मे पूजन व्यापार आरंभ शुभ मुहुर्त वही खाता लिखना प्रथम ग्राहक का शुभ आरंभ।

व्यापार आरंभ करने का मुहूर्त :-
01:50 AM - 03:30 AM, 05:30 AM - 08:00 AM, 09:30 AM - 11:00 AM

गोवर्धन-पूजा एवं अन्न-कूट

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को गोवर्धन पुजा नाम का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियाँ गोबर का भगवान बनाकर उसकी भाली प्रकार से पुजा करती है। और संध्या के समय अन्नादि का कडा कर उसकेउपले थापकी है। और बाकी खेत आदि मे गिरा देती है। इसी दिन नवीन अन्न का भोजन बनाकर भगवान को भोग लगाया जाता है। और अपने सब अतिथियों को भोजन कराया जाता है।

अपने सामने गाय के गोबर से पर्वत जैसे दिखे ऐसी आकृती बनाले, फिर बाद मे आसन पर बैठ जाए। गोवर्धन पर्वत के चारों ओर हल्दी ओर कुंकुम का लेप बनाकर तीन गोल घेरे बनाएँ। इस घेरे के बाहर आठ दिशाओं मे आठ स्वस्तिक बनाएँ। प्रत्येक स्वस्तिक एवं गोवर्धन पर्वत पर पुष्प निम्न मंत्र बोलते हुए अर्पित करे।

मंत्र :- **।। ॐ श्रीं ह्रीं गोवर्धनाय भद्राय ऐं ऐं ॐ नमः।।**

इसके बाद गोवर्धन पर्वत के सामने एक दीपक प्रज्वलित करे। धूप जला दे। फिर पर्वत के चारो ओर मौली से उपरोक्त मंत्र बोलते हुए बांध दे। तथा तीन गांठ लगाऐ। फल, बताशा आदि नैवेद्य रुप से अर्पित करते हुए भगवान कृष्ण का स्मरण करे। उपरोक्त मंत्र का पांच मिनट जप करे और चढाए हुए नैवेद्य को प्रसाद रुप मे स्वीकार करे।

दि.29-11-2019, मंगलवार, यम द्वितीया :- यमधर्म राज की बहन यमुना (यमी) के द्वारा किया गया बहन भाई को घर बुलाकर पुजन भाईका बहन को सम्मान (उपहार अपने शक्ति अनुसार) कनकधारा एवं अन्नपुर्ण साधना पांच दिनों की साधना परिसमाप्ति एवं घर पर परिवार सहित महालक्ष्मी जी की स्थापना कहते है। भगवान् विष्णु ने वामन अवतार मे राजा बली को पाताल का राज्य दिया था। लेकिन जब उसने भगवान् वामन अवतार रुपि विष्णु को पृथ्वी की सश्य श्यामलता एवं धन, ऐश्वर्य को देखने के लिए कहा। दीप पूजन करने या जो घर, व्यापार स्थल की दीप पूजन कर सजाने की बात करता है।

गृहलक्ष्मी पूजन साधना

श्री नारायण ने नारद जी को बताया कि समस्त देवताओं के साथ दीपावली के दिन इन्द्र ने श्रद्धा पुर्वक अपनी पत्नी इन्द्राणी को गृहलक्ष्मी मान कर, उसकी पूजा स्तुति करे। जिससे वे देवताओं के अधिपति और कुबेर के समान वैभवशाली हुए। शास्त्रों के अनुसार भी दीपावली के पर्व पर अपनी स्वयं की पत्नी को गृहलक्ष्मी मान कर उसकी पुजा करने का विधान है।

जब पत्नी को ''गृहलक्ष्मी'' कहा जाता है। तो फिर केवल शब्द से ही वह गृहलक्ष्मी नही कहलाती वास्तव मे ही शास्त्रो मे इससे सम्बन्धित पूर्ण पूजा विधान है, और ऐसा करने पर वह पत्नी लक्ष्मी स्वरुप बनाकर, पुरे वर्ष भर घर मे महकती रहती है। धन, वैभव, सुख, ऐश्वर्य, सम्पदा, पुत्र, पौत्र आदि का वृद्धि होता है।

भगवती महालक्ष्मी का पूजन करे। पूजन के बाद और महालक्ष्मी की आरती से पहले शास्त्रों मे विधान है, कि पति स्वयं अपने हाथों से अपनी पत्नी को उसे गृहलक्ष्मी मानकर पूजन करे। पूजन करते समय मन मे यह भावना हो, कि यह साक्षात् लक्ष्मी है। मेरे घर मे आकर इसने सुख, दुःख मे मेरा साथ दिया है। मेरा परिवार बसाया है। मुझे अच्छे पुत्र और पुत्रियाँ प्रदान की है।

विधानः- सबसे पहले साधक या लक्ष्मी पूजन करने वाला गृहस्थ अपनी पत्नी को गृहलक्ष्मी मान कर उसके लिए आसन बिछाये।

सर्व सम्पत्-स्वरुपिण्यै सर्वाराध्यै नमो नमः।
हरि-भक्ति प्रदायै च हर्ष-दात्रै नमो नमः।।

इसके बाद उस दिन पत्नी के लिए विशेष रुप से जो वस्त्र खरीद कर लाये। इस समय उसे प्रदान करना चाहिए।

वस्त्र :- **सम्पत्यधिष्ठात् देव्यै महा देव्यै नमो नमः**
नमो वृद्धि स्वरुपायै वृद्धिदायै नमो नमः।।

आभूषण :- शास्त्रों मे विधान है कि दीपावली से पुर्व कोई न कोई नया आभूषण पत्नीके लिए अवश्य से ही बनवा लेना चाहिए। इस समय निम्न मंत्र पढता हुआ उसे आभूषण प्रदान करे।

वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्या लक्ष्यी क्षीर-सागरे
स्वर्ण लक्ष्मीरिन्द्र गेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये।।

सौभाग्य आभूषण :- पुरे वर्ष भर सभी स्त्रियों संपुर्णता के लिए शास्त्रो के अनुसार इस समय पत्नी को ''पंच यन्त्र'' पहिनाने चाहिए। इन पंच यन्त्रों के नाम **अन्नपुर्णा यंत्र, गृहलक्ष्मी यंत्र, सौभाग्य यंत्र, भाग्योदय यंत्र, सर्वसुख सम्पत्ति यंत्र।** इस मुहुर्त पर पति स्वयं अपने हाथों से इन पांचो विशिष्ठ यन्त्रों को पत्नी के गले मे पहिनाये। साधक को ध्यान रहे कि वे यन्त्र मन्त्र सिद्ध तथा चैतन्य हो।

गृहलक्ष्मीश्च गृहणी गेहे च गृह देवता।
सुरभिः सागरेजाता दक्षिणा यक्ष कामिनी।।

द्रव्य प्रदान :- इसके बाद साधक स्वयं अपने हाथों से यथा सम्भव रुपयों की गड्डी चाँदी के रुपये गृहलक्ष्मी के आंचल मे समर्पित करे।

अदितिदेव माता एवं कमला कमलालया।
स्वाहा त्वं च हविर्दाने भव्य दाने स्वधास्म-ता।।

इसके बाद अपने हाथों से पत्नी के मुंह मे ताम्बूल देते हुए उच्चारण करे।

सर्वेषा च परा माता सर्व बान्धव रुपिणी।
धर्मार्थ काम मोक्षाणां त्वं च धारण रुपिणी।।

इसके बाद महालक्ष्मी की आरती आदि क्रियाएँ सम्पन्न करे। और फिर गृहलक्ष्मी को प्रदान किये हुए रुपये तथा सौभाग्य आभूषणों अर्थात् पाँचो यन्त्रों को लक्ष्मी के सामने रख दे। प्रातःकाल उठ कर पुनः पति-पत्नि लक्ष्मी का पूजन और उसकी आरती करे। तथा प्रदान किये हुए रुपये पांचो यन्त्र तथा आभूषण आदि आभूषणों की पेटी मे सुरक्षित रुप से रख दे।

भाग्यलक्ष्मी साधना

यह साधना समस्त प्रकार से भाग्योदय के लिए अतुलनीय प्रयोग है। यह एक महत्वपुर्ण और सफलतादायक साधना है। तथा प्रत्येक साधक के लिए यह आवश्यक है। क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने पर जीवन की जो इच्छा होती है वह पुर्ण हो जाती है। तथा उसे प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता मिलती है। नौकरी, प्रमोशन भाग्योदय आर्थिक उन्नति आदि अनेक कार्यों मे यह प्रयोग सफलतादायक कहा गया है।

दीपावली मे किसी भी दिन इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है। यह केवल तीन दिन का प्रयोग है और साधक को चाहिए कि पिले वस्त्र पहिन कर प्रातःकाल साधना के लिए बैठ जाय, और सामने किसी पात्र मे **सियारसिंगी** रखकर उसको केसर का तिलक कर सामने तेल का दीपक अगरबत्ती लगाकर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र को नौ (9) मालाएँ फेरनी आवश्यक है।

मंत्रः- **।। ॐ नमः भाग्यलक्ष्मी च विद्‌महे अष्टलक्ष्मी च धिमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ।।**

इस प्रकार तीन दिन प्रयोग सम्पन्न करने के बाद उस सियारसिंगी किसी पवित्र स्थान पर रख दे और नित्य उसके दर्शन करे उसके बार ही काम पर जावे ऐसा करने मे शीघ्र ही भाग्योदय होता है और साधक उसे प्रत्येक कार्य सफलता मिलती है।

अखण्ड लक्ष्मी साधना

यह जीवन मे समस्त प्रकार की उन्नति के लिए श्रेष्ठ साधना है। जीवन मे स्वस्थ शरीर बैंक, बैलन्स, साहस, शक्ति, भवन, सन्तान, पत्नी सुख, दीर्घायु विदेश यात्रा और अन्य कई प्रकार की पुर्ति को अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग कहा जाता है।

दीपावली के दिन यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। यह प्रयोग मात्र दिन का है।

प्रातःकाल उठकर साधक स्नान आदि कर सामने किसी पात्र मे अखण्ड लक्ष्मी यन्त्र रख दे। जो कि मन्त्र सिद्धि प्राणप्रति युक्त हो। फिर जल से स्नान कराकर यन्त्र को पोछ कर उस पर केसर से तिलक कर इसके बाद स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का जप करे।

मंत्रः- **।।ॐ ह्रीं अष्ट लक्ष्म्यै नमः।।**

नित्य ग्यारह (11) मालाएँ फेरनी आवश्यक है। इस प्रकार तीन दिन तक इस मन्त्र का जप करे। जब साधना सम्पन्न हो जाय तो इस यन्त्र को घर मे अच्छे स्थान पर या अपनी तिजोरी मे रख दे।ऐसा करने पर साधना सम्पन्न हो जाती है। और उसे जीवन मे पुर्ण भौतिक तथा सभी प्रकार के सुख प्राप्त होने लगते है।

एक दुर्लभ गोपनिय अद्‌भुत सफलता एवं सिद्धी दायक प्रयोग

साधना विधानः- धनत्रयोदशी से लेकर यम द्वितीया तक अर्थात् दीपावली के दो दिन पुर्व, और दीपावली के दो दिन बाद, कुल पाँच दिनो तक नित्य **महालक्ष्मी यंत्र एवं कुबेर यंत्र** के सामने निम्न स्तोत्र का एक सौ एक (101) पाठ करे। तो निश्चय ही साधक अतुलनीय धन सम्पदा का मालिक होता है। तथा अपने प्रारब्ध मे लिखे दरिद्रता को हमेशा-हमेशा के लिये मिटाने मे समर्थ होता है।

यदि साधना काल मे **स्फटिक माला** गले मे धारण कर, पिले वस्त्र पहनकर, पिले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठे, घी का दीपक लगाकर यह साधना की जाय, तो सफलता निश्चित मिलती है।

परम पुज्यनिय सद्‌गुरुदेव की कृपा से वीतरागी घुमक्कड योगी अला स्वामी जी ने सैंकडों दरिद्रों से यह साधना करवाकर, उन्हे लक्ष्मीवान् बनाया, और जब अगले दीपावली को वे मिलने आया तो साधकों ने उन्हे सोना, चाँदी से तोला था। बाद मे वह सब दान मे बाँट दिया गया। ऐसा ही **दिव्य स्तोत्र**...

इन्द्रकृत महालक्ष्मी स्तोत्र

इन्द्र उवाच

नमामि सर्वभूतानां जननी पद्मसम्भवाम् ।
श्रियं मुनीन्द्र पद्माक्षीं विष्णोर्वक्षः स्थलस्थिताम् ।।1।।
त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपालिनी।
संध्या रात्रि प्रभा भूमिर्मेधा श्रद्धा सरस्वति।।2।।
यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्ति फलदायिनी।।3।।
आन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्ड नीति स्त्वमेव च।
सौम्या सौम्येर्जगद्रूपै स्त्वयेदं देवि पूरितम् ।।4।।
का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः।।5।।
त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम् ।
विनष्टप्रायम भवत्त्वयेदानीं सेमधितम् ।।6।।
दाराः पुत्रास्तथागारं सुहृद्धान्यद्धनादिकम् ।
भवत्ये तन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणानृणाम् ।।7।।

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम् ।
देवि त्वदृष्टी दृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम् ।।8।।
त्वं मना सर्वभूतानां देवदेवो हरिः पिता ।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम् ।।9।।
मानं कोषं तथा कोष्ठं गृहं मा परिच्छदम् ।
मा शरीरम् कलत्रञ्च त्यजेयाथाः सर्व्वपावनि।।10।।
मा पुत्रान्मासुहृद्वर्गान्मां पशुन्मा विभूषणम् ।
त्यजेथा देव देवस्य विष्णोर्व्वक्षः स्थलाश्रये।।11।।
सत्येनाशौच सत्वाभ्यां तथा शिलादिभिर्गुणैः।
त्यजन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयामले ।।12।।
त्वयावलोकीताः सद्यः शीलार्थरखिलैर्गुणै ।
कुलैश्वर्यश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि ।।13।।
सुश्लाघ्यः गुणी धन्यः कुलीनः सबुद्धिमान् ।
स शुरः स च विक्रान्तो यस्त्वया देवि विक्षितः।।14।।
सद्यौ वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकलागुणाः।
पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं विष्णु वल्लभे।।15।।
न ते वर्णयितुं शक्तागुणाञ्जिह्वा हि वेधसः।
प्रसीद देवी पद्माक्षि मास्माँ स्त्याक्षी कदाचनः।।16।।

फल कथन - पराशर उवाचः-

एवं श्रीः संस्तुता सम्यक्प्राह ह्यष्टा शतक्रतुम्।
श्रृण्वतां देवदेवानां प्रादुर्भूता स्थितद्विज ।।17।।

श्री रुवाच :-

परितुष्टास्मि देवेश स्तोत्रेणानेन हेतुना।
वरं वृणीष्व यस्तिष्टो वरदाहं समागता।।18।।
वरदा यदि देवि त्वं वरार्हो यदि वाप्यहम् ।
त्रैलोक्यं न त्वया त्याज्यमेष मे ध्यार्थितो वर।।19।।
स्तोत्रेणा यस्तवैतेन त्वां स्तोष्येत्पद्मसम्भवे।
स त्वया न परित्याज्यो द्वितियस्तु वरो मम ।।20।।

लक्ष्मीरुवाच :-

त्रैलोक्यं त्रिदश श्रेष्ठ सन्त्यजामि न वासन।
दत्तो वरो मया त्वां तु स्तोत्रेण परितुष्टया ।।21।।
यश्च सायं तथा प्रातः स्तोत्रेणानेन मानवः।
मां स्तोष्यति न तस्याहं भविष्यामि पराङ्मुखि।।22।।

1. महालक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग सर्व श्रेष्ठ एवं महत्व पूर्ण है और जिस साधक ने भी इस मंत्र का प्रयोग किया है उसे अपने जीवन मे पूरी सफलता मिली है। दीपावली की रात्रि को यह मंत्र प्रयोग किया जा सकता है। इस रात्रि को महालक्ष्मी के चित्र के सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर, इक्कीस मालाएँ फेरने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव नही रहता।

मंत्र :- **।।ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी देवी आगच्छ आगच्छ मम गृहे ममनिवास स्थाने धनधारा वर्षय वर्षय सर्व मनवांछितं पूरय पूरय, क्षणमीक्षणैः मम सर्व क्षण सुखमयं कुरु कुरु ।।**

वस्तुतः यह मंत्र अत्यन्त ही श्रेष्ठ है, मै प्रत्येक साधक को यह सलाह देता हूँ कि वह गम्भीरता पूर्वक इस मंत्र के महत्व को समझे और इसका प्रयोग करे।

2.अष्टलक्ष्मी प्रयोग

यह चालीस दिन का प्रयोग है। और नित्य ग्यारह मालाए रात्रि को जपने का विधान है।

इसी प्रकार इस मंत्र का प्रयोग दीपावली की रात्रि को भी किया जा सकता है। यदि साधक दीपावली की रात्रि को इक्कीस मालाएँ इस मंत्र जप करे तो निश्चय ही उसे धन-धान्य, कुटुम्ब-सुख, जमीन-सुख, व्यापार वृद्धि, कीर्ति, सम्मान, शत्रु नाश एवं, भाग्योदय सम्भव होता है।

यदि यह सम्भव न हो तो नित्य एक बार इस मंत्र का उच्चारण करना ही आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्व पूर्ण माना गया है।

मंत्र :- **।।ॐ ह्रीं श्रीं रुपे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं दिव्यानुभावे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं उज्ज्वले प्रसीद प्रसीद। ॐ ह्रीं श्रीं उज्ज्वल रुपे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ज्योतिर्मयि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ज्योति रुपधरे प्रसीद प्रसीद। मम गृहं मम गृहस्थ अंगणां नन्दनवनं कुरु कुरु।ॐ अमृतकुम्भे प्रसीद प्रसीद। ॐ अमृतकुम्भरुपे प्रसीद प्रसीद मम वांछितं देहि देहि। ॐ ऋद्धिदे प्रसीद प्रसीद। ॐ समृद्धिदे प्रसीद प्रसीद, ॐ महालक्ष्मी प्रसीद प्रसीद, ॐ श्री लोकमानः प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं लोकजननि प्रसीद प्रसीद,ॐ श्रीं शोभा वर्द्धिनि प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं अमृत संजीवनि प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं शान्तलहरि प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं प्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं शांत प्रशांतलहरि प्रसीद प्रसीद, ॐ श्रीं ग्लौं श्रीं नमः, ॐ ह्रीं सर्व शत्रु दमनि**

सर्व शत्रून् निवारय निवारय, विघ्नं छिन्धि छिन्धि, प्रसीद प्रसीद धरणेन्द्र पद्मावति मम सुखं कुरु कुरु प्रसीद प्रसीद।।

जैन साहित्य के अनुसार यह मंत्र तुरन्त सिद्धिदायक एवं उन्नतिदायक है।

3.सर्व सिद्धिदायक प्रयोग

यह प्रयोग मात्र ग्यारह दिन का है और नित्य स्फटिक माला से ग्यारह मालाए फेरने का विधान है। प्रयोग करते समय सामने अगरबत्ती व दीपक जलाना आवश्यक माना गया है।

यदि अनुष्ठान् न करे और नित्य एक माला प्रातः काल इस मंत्र की जपे तब भी उसके जीवन मे समस्त प्रकार की सिद्धियों की उपलब्धि हो जाती है।

दीपावली की रात्रि को भी इस मंत्र प्रयोग को अनुकूल माना है और कहा गया है कि यदि कोई साधक दीपावली की रात्रि को इस मंत्र की इक्यावन (51) फेर देता है, वह निश्चय ही अपने जीवन मे पूर्णता एवं समस्त प्रकार सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है।

मंत्र :- **।।ॐ मंगलकरि प्रसीद प्रसीद, सुखकरि प्रसीद प्रसीद, ॐ शान्तिकरि प्रसीद प्रसीद, ॐ ऋद्धि सिद्धि करि प्रसीद प्रसीद, सुखं देहि, शांति देहि, ऋद्धि सिद्धिं देहि, ॐ किलि किलि एहि एहि आगच्छ आगच्छ सर्वसिद्धिदायिनि मम मनोवांछितं शीघ्रं पूरय पूरय।।**

4.लक्ष्मी वश्य प्रयोग

यह मंत्र लक्ष्मी को वश में करने मे समर्थ है ओर कहा जाता है। कि कोई भी साधक नित्य पांच (5) मालाएँ इस मंत्र की जप लेना है। तो साठ दिन मे यह सिद्ध हो जाता है ओर लक्ष्मी उसके वश मे हो जाती है। इसके बाद पूरे जीवन मे उसे आर्थिक व्यापारिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नही रहता।

यह मंत्र रात्रि को जपा जाता है। सफेद आसन बिछाकर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर उत्तर की तरफ मुंह कर अपने सामने **कनकधारा यंत्र** स्थापित कर स्फटिक माला से नित्य पांच सौ (500) मंत्र जप करे। इस प्रकार साठ दिन तक यह प्रयोग करने पर अद्भुत सफलता प्राप्त हो जाती है।

मंत्र :- **।।ॐ श्रीधारे प्रसीद प्रसीद। उपहृदयम् ॐ त्रिलोकवासिन्यै केवल लक्ष्म्यै नमः धनधान्य हिरण्य सुवर्णाधारां मम निवासे पातय पातय। ॐ श्रीं रत्न सिंहासने प्रसीद प्रसीद। ॐ रत्नकुण्डले प्रसीद प्रसीद, रत्न मुकुटे प्रसीद प्रसीद। रत्नभूषणं**

प्रसीद प्रसीद। ॐ चारुच्छत्रचामरे प्रसीद प्रसीद। ॐ सहस्त्रकिरण प्रद्योतकारि, सर्व राज वशकरि, सर्व प्रजावशकरि, सर्व लोकवशकरि, सर्व मम वश्यं कुरु कुरु ।।

वस्तुतः यह प्रयोग सैंकडों हजारों साधकों ने आजमाया है और प्रत्येक बार उनको सफलता प्राप्त हुई है।

दीपावली की रात्रि को भी इस मंत्र का विशेष महत्व है और कहा जाता है कि यदि दीपावली की रात्रि को जो साधक इस मंत्रकी इक्कीस (21) मालाएँ फेर लेता है, तो महालक्ष्मी निश्चय ही उसके वश में हो जाती है। और वह जीवन मे आश्चर्यजनक उन्नति करने लग जाता है।

सफेद आसन एवं पहिनने के वस्त्र भी सफेद हो। दीपावली की रात्रि को यह मंत्र प्रयोग करते समय उत्तर की तरफ मुंह हो और स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाये।

5.सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग

एक लाख मंत्र जप करने पर यह सिद्ध होता है। नित्य ग्यारह (11) मालाए फेरनी चाहिए। यह मंत्र जप प्रातः काल किया जाता है। साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने महालक्ष्मी का चित्र एवं **श्री यंत्र** स्थापित करे। उसकी पूजा करे। और फिर **स्फटिक माला** से यह मंत्र जप करे।

मंत्र :- **।।ॐ ह्रीं विश्वरुपिणि, विभूति-विभूतिरुपिणि, सृष्टि-सृष्टिरुपिणि, धृति-धृतिरुपिणि, कीर्ति-कीर्तिरुपिणि, सिद्धि-सिद्धिरूपिणि, सर्वसुख साम्राज्य दायिनि मम त्रिलोकसंपदं कुरु कुरु, हिरण्यसुवर्णे, सुखसिद्धि सौभाग्यैः श्रेष्टैः सर्वोपकरणैः सर्वभोगैः सर्वोपभोगैश्च मम कोषकोष्टागाराणि भर भर पूरय पूरय।।**

यदि दीपावली की रात्रि को जो साधक इस मंत्र की एक सौ एक (101) मालाएँ फेर ले तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रह ही नही सकता। एक माला मे एक सौ आठ मनके होते है।

वस्तुतः यह मंत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। और यदि साधक चाहे तो इस मंत्र का उठते-बैठते भी जप कर सकता है। निरन्तर इस मंत्र के जप से अनुकूल फल प्राप्त होता है।

6.व्यापार यंत्र

गुरुजी के अनुसार यह यंत्र महत्वपूर्ण है। कभी भी रविवार या गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, दीपावली के रात्रि मे इस यंत्र को चांदी या तांबे के पतरे पर खुदवा ले। यदि यह सम्भव न हो तो कागज पर या भोजपत्र पर भी इस यंत्र को केसर से इस अवसर पर अंकित किया जा सकता है। फिर उसी दिन इस

यंत्र की पूजा करे। और उसी दिन इसके सामने बैठकर निम्न मंत्र की एक सौ पच्चीस (125) मालाएँ फेरे, इसमे स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

मंत्र :- **।।ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै व्यापार वृद्धि कुरु कुरु क्लीं ह्रीं ॐ अष्टलक्ष्म्यै नमः।।**

पूजन के बाद इस यंत्र को घर के संदूक मे, तिजोरी मे या दुकान पर रखा जा सकता है। नित्य इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावें तथा दीपावली की रात्रि को इस यंत्र का पूजन करे।

यदि इस प्रकार का यंत्र दुकान पर रख दिया जाय और नित्य अगरबत्ती लगाई जाय तो निश्चय ही उसके जीवन मे व्यापार उन्नति आर्थिक लाभ एवं पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

7.दीपावली यंत्र

यह यंत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छोटे से तांबे के, चाँदी के टुकडे पर दीपावली के दिन इस यंत्र को व्यक्ति स्वयं कुंकुम या केसर से अंकित करे। और उसे घडे मे रख दे। यह घडा घर के भण्डार मे रखने से उसके घर मे निरन्तर लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहती है।

घडे मे यंत्र रखकर, उस घडे मे पानी भर दे। वह पानी रोगी को पिलाने से रोग समाप्त हो जाता है। घडे मे थोडा पानी रखे और नित्य बदलते रहे। परन्तु यंत्र को भूलकर भी घडे से बाहर न निकाले। यदि घडे मे यह यंत्र रखकर उसमे धान्य भर दे तो उसके घर मे धन-धान्य की कभी न्यूनता नही आती।

8.व्यापार बन्ध यंत्र

यदि कोई व्यक्ति या व्यापारी परेशान कर रहा हो, और समस्याएँ पैदा कर रहा हो तो इस यंत्र का प्रयोग किया जा सकता है।

दीपावली को कागज पर इस यंत्र को बना ले और फिर उस यंत्र काली स्याही से अंकित करना चाहिए।

फिर इस यंत्र को सामने रखकर निम्न लिखित मंत्र की एक माला उल्टी फेरनी चाहिए।

मंत्र :- **।। क्लीं अमुकं व्यापार बंधय बंधय हुँ फट् ।।**

यहाँ पर अमुक के स्थान पर उस शत्रु का नाम उच्चारित करना चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

फिर उसी रात को दुकान के आगे एक हाथ भर गड्ढा खोदकर, उसमे इस यंत्र को गाड देना चाहिए। ऐसा करने पर उसका व्यापार, बंध जाता है। और धीरे धीरे व्यापार चौपट हो जाता है।

श्री पद्मावती स्तोत्रम्

श्रीमद् गीर्वाण चक्रस्फूट मुकुट तटि माणिक्यमाला ।
ज्योतिर्ज्वाला कराला स्कुरित मुकुरिका दृष्ट पादार विन्दे ।।
व्याघ्रोरुल्का सहस्त्र स्फुरज्वलन शिखालोलपाशां कुशाङ्चे ।
आं क्रों ह्रीं मन्त्र पुरे क्षपित कलिमले रक्ष मां देवि पद्मे ।।1।।
भित्वापातालमूलं चल चलित चलीते व्याल लीला कराले ।
विद्युच्छण्ड प्रचन्ड प्रहरणसहितैः सदभु जैस्तर्जयन्ति।।
देत्यैन्दं क्रुरदंष्ट्रकिटकिट घटितेस्पष्ट भीमाट्टहासे।
माया जीमूत माला कुहरित गगने रक्ष मां देवि पद्मे ।।2।।
कूजत्को दंड कांडो डमर विधुरित क्रुर घोरोप सर्ग।
दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुण मणि रणत्किंकिणी क्काणरम्यं ।।
भासव्दैडूर्य दंड मदन विजयिनो विभ्रतीपार्श्व भर्तु ।
सादेवो पद्म हस्ता विघटयुत महा डामरं मामकोनं ।।3।।
भृंगी काली कराली परिजन सहिते चण्डि चामुण्डि नित्ये ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्द्धे क्षतरिपुजिवहे ह्रीं महामन्त्र रुपे ।।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः भृंग संग भृकुटि पुट तटे त्रासि तोछाम दैत्ये ।
झां झीं झूं झः प्रचण्डे, स्तुति शत मुखरे रक्ष मां देवि पद्मे ।।4।।
चंचत्कांची कलापे स्तन तट विलुठ त्तार हारावली के।
प्रोफुल्लत्पारिजात द्रुम कुसुम महामंजरी पूज्यपादे ।।
द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं व्रीं समेते भुवन वसकरी क्षोभिणी द्राविणीत्वं ।
आं ऐं औं पद्महस्ते कुरु कुरु घटने रक्ष मां देवि पद्मे ।।5।।
लीला व्यालोल नीलोत्पल दलनयने प्रज्वल द्वाडवाप्तिः।
उद्यज्ज्वाला स्फुलिंग स्फुर दरुण करुदग्र वज्रा गहस्ते ।।
ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः हरति हर हर हूं कार भीमेक नादे ।
पद्मे पद्मसनस्थै व्यय नय दुरितं रक्ष मां देवी पद्मे ।।6।।

कोपं वं जं सं हं सः कुवलय कलितोद्याम लीला प्रबंधे।
झां झीं झूं झः पवित्रे शशिकर धवले प्रक्षरक्षीर गौरे।।
व्याल व्याबद्ध जूटे प्रबल बल महाकाल कूटं हरंति।
हा हा हूं कार नादे कृतकर कमले रक्ष मां पद्मे ।।7।।
प्रतर्वालार्क्करस्मि छुरित घन महासांद्रसिंदूर धूली ।
संध्या रागारुणांगी त्रिदश वर वधू वंद्य पादार विन्दे।।
चंचच्चंडासिधारा प्रहतरिपु कुले कुंडलो घृष्ट गंडे।
श्रां श्रीं श्रूं श्रः स्मरंति मदगज गमने रक्ष मां देवी पद्मे।।8।।
विस्तीर्णे पद्मपीठे कमलदल निवासोचिते काम गुप्ते ।
लां तां ग्रीं श्रीं समेते प्रहतिस वदने दिव्यहस्ते प्रशस्ते ।।
रक्ते रक्तोत्पलांग, प्रतिवहसि सदावाग्भवं काम बीजं ।
हंसारुढे त्रिनेत्रे भगवति वरदे रक्ष मां देवी पद्मे ।।9।।
षट्कोणे चक्र मध्ये प्रणव वरयुते वाग्भवे काम राजे ।
हंसारुढे सविन्दो विकसित कमले कर्णिकाग्रे निधाय ।।
नित्ये क्लिन्ने मदाद्रे द्रवयसि सततं सां कुसे पास हस्ते ।
ध्यानात् संक्षोभयन्ति त्रिभुवन वशकृद् रक्ष मां देवी पद्मे ।।10।।
आं क्रों ह्रीं पंच वर्णे लिखित प्रवर षट् चक्र मध्ये हस क्लीं ।
क्रौं क्रौं पत्रां तरालै स्वरपरि कलिते वायुना वेष्टितांगी।।
ह्रीं वेष्टयां रक्त पुष्पैर्जपित दल महा क्षोभिणी द्राविणीत्वं।
त्रैलोक्यं चालयति सपदि जनहिते रक्ष मां देवि पद्मे ।।11।।
ब्रह्माणी कालरात्री भगवती वरदे चण्डि चामुण्डि नित्ये ।
मातः गांधारि गौरी धृति मति विजये कीर्ति ह्रीं स्तुत्य पद्मे।।
संग्रामे शत्रु मध्ये ज्वलद नल जले वेष्टि तेन्यैः सुरास्त्रेः।
क्षां क्षों क्षुं क्षः क्षरगार्धे, क्षतरिपु निबहे रक्ष मां देवि पद्मे ।।12।।

खड्गै कोदांड कांडे मुसल हलहर्रे बाण नाराच चक्रे ।
शक्त्या सल्य त्रिशुलै वर फरगा ससरै मुदगरैर्मुष्टि दंडे ।।
पासैपाषाराग वृक्षे वर गिर सहितै रिष्ट शस्त्रैर्माल्यैः।
दुष्टानां दारयंति वरभुज ललिते रक्ष मां देवि पद्मे ।।13।।
यस्या देवे नरेंद्रैर मरपतिगणैः किन्नरै दानवेन्द्रैः।
सिद्धैर्नागेन्द्र यक्षर्वर मुकुट तटै धूष्ट पादारविन्देः।।
सौम्ये सौभाग्य लक्ष्मी दलित कलिमले पद्म कल्याणमालै ।
अंबे काले समाधि प्रकट्य परमं रक्ष मां देवि पद्मे।।14।।
यूपे श्चंदन तंदुले शुभ महागंधेश्च मन्त्रालिक ।
नानावर्ण फलैः विचित्र सरसैः दिव्यं मनोहारिभिः।।
दीपे नैवेद्य वस्त्रैरन्तभवनु करै भक्तियुक्तं पदत्वां।
राज्यं हेत्वां ग्रहण भगवति वरदे रक्ष मां देवि पद्मे ।।15।।
मात पद्मनि पद्मराग रुचिरे पद्मप्रसूनानने।
पद्मे पद्म वनस्थिते परिलसत्यद्माक्षि पद्मालये।।
पद्मामोदिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनार्चिते ।
पद्मोल्लासिनि पद्मनाभिनिलये पद्मालयं पाहि मां ।।16।।
दिव्यं स्तोत्रं पवित्रं पटुतर पठितं भक्तिपूर्वं त्रिसंध्यं ।
लक्ष्मी सौभाग्यरुपं दलित कलिमलं मंगलं मंगलानां ।।
पूज्या कल्याणमालां जनयति सततं पार्श्वनाथ प्रसादात।
देवि पद्मावती नः हसित पदनयस्तुता दासवेन्द्रै ।।17।।
या देवि त्रिपुरा पुरात्रयगताशीघ्रसि शोधप्रदा।
या देवी समय समस्त भुवने संगीयते कामदा।।
तारामान विमर्दनी भगवति देवी च पद्मावती।।18।।

❖ कार्यक्रम ❖

दि.19-10-2019, मंगलवार :- सर्वबाधा निवारण भवानी साधना शिविर, तुळजापुर, जि.उस्मानाबाद।

दि.03-11-2019, बुधवार :- सर्वभय रोग, शत्रुबाधा निवारण भैरव साधना शिविर, बेरला (छत्तिसगढ)।

दि.10-11-2019, रविवार :- सर्व मनोकामना पूर्ति पाशुपतास्त्र साधना शिविर, अमरकण्टक (म.प्र.)।

दि.12-11-2019, मंगलवार :- कार्तिक पुर्णिमा, श्री निखिल चेतना केन्द्र, हैदराबाद।

दि.17-11-2019, रविवार :- सर्व बैभव प्राप्ती भाग्यलक्ष्मी साधना शिविर, चन्द्रपूर (महा.)

दि.27-11-2019, बुधवार :- गुरुदेव पादुका सिद्धी दिवस श्री निखिल चेतना केन्द्र, हैदराबाद।

दि.01-12-2019, रविवार :- अय्यप्पा स्वामी माला धारण श्री निखिल चेतना केन्द्र, हैदराबाद।

दि.09-01-2020, गुरुवार :- अय्यप्पा स्वामी जो लोगों को रेल द्वारा यात्रा करते है।

दि.10-01-2020, शुक्रवार :- अय्यप्पा स्वामी जो लोगों को वायुयान द्वारा यात्रा करते है।

दि.16-01-2020, गुरुवार :- अय्यप्पा स्वामी माला विसर्जन।

दि.19-01-2020, बुधवार :- गुरुजी श्री अनिल कुमार जोशी जी पाणी ग्रहण महोत्सव, जुनागढ (गुजरात)।

दि.21-01-2020, शुक्रवार :- गुरुजी श्री अनिल कुमार जोशी जी जन्मोत्सव एवं महा शिवरात्रि, जुनागढ (गुजरात)

नोट :- इस दीपावली पूजन पैकेट के साथ गुरुजी के आशीर्वाद स्वरुप ''गृहलक्ष्मी साधना'' निशुल्क दी जा रही है।

सौजन्य से

गुरुकृपा पूजा स्टोर्स

4-8-438, राम मंदिर के पिछे, गौलिगुडा, हैदराबाद - 500 012 (तेलंगाणा)

फोनः 040-24553286, Mb: 9440782655,9494563564

email-udaydattjoshi@gmail.com / www.omnikhilchetanakendra.com

भवदिय

उदयदत्त जोशी

4-8-438, राम मंदिर के पिछे, गौलिगुडा, हैदराबाद - 500 012 (तेलंगाणा)

फोनः 040-2632434, Mb : 9440782655

email-udaydattjoshi@gmail.com / www.omnikhilchetanakendra.com